प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड-महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

''शोध-ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें |
फॉण्ट-कृति देव १० वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी |
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी |
आलेख विषयतज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे |
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी |
चयनित आलेख के लिए १०००रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा |
लेखक मौलिख शोध परख एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे |
व्हाट्स एप-९४०५३८४६७२

बैंक विवरण

| | |
|---|---|
| NAME | SUNIL GULABSING JADHAV |
| BAINK | BANK OF MAHARASHTA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA |
| ACCOUNT NO. | 2015 8925 290 |
| IFSC CODE | MAHB0000720 |

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

# इस अंक में....


| | | | |
|---|---|---|---|
| 01. | बंजारा समाजः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य | डॉ. श्यामराव राठोड | 10 |
| 02. | विद्रोह और आक्रोश के कवि धूमिल | डॉ. हाशमबेग मिर्झा | 17 |
| 03. | दलित विमर्श: विविध आयाम | प्रा. डॉ. रणजीत जाधव | 23 |
| 04. | सिसकियाँ लेता स्वर्ग'–एक अध्ययन | मुदस्सिर अहमद भट्ट | 27 |
| 05. | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री–विमर्श | प्रा.डॉ. सुधीर ग.वाघ | 29 |
| 06. | भारतीय समाज में दलित अस्मिता के प्रश्न | विवेक मीना | 31 |
| 07. | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त किसान–जीवन | सौरभ कुमार | 33 |
| 08. | केदारनाथ सिंह के काव्य में बिंब–विधान | प्रो.एम.सुधाकर | 37 |
| 09. | हिंदी सिनेमा और अनुपस्थित दलित–आदिवासी यथार्थ | सुरेश कुमार निराला | 40 |
| 10. | हिंदी और राजस्थानी भाषा की ध्वनि व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन | कैलाश चन्द्र | 45 |
| 11. | .स्वच्छ भारत अभियानः एक सतत मूल्यांकन | अरविन्द कुमार शुक्ल | 48 |
| 12. | प्रसाद के चार काव्य : एक सूक्ष्म अवलोकन | चन्द्रकान्त तिवारी | 52 |
| 13. | साहित्य, सिनेमा और बाजारवाद | डॉ.आर.डी.मोरे | 59 |
| 14. | मानस का हंस' उपन्यास में युगबोध | प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे | 61 |
| 15. | बारह घंटे उपन्यासः मनोवैज्ञानिक परिदृश्य | डॉ.युवराज माने | 64 |
| 16. | दलित विमर्शः उद्‌भव एवं विकास | प्रा.भुमरे पी.एम. | 67 |
| 17. | 17.'सांस्कृतिक अस्मिता और दलित बस्तियां' (हिंदी मराठी दलित उपन्यासों के संदर्भ में एक तुलनात्म विवेचन) | माधनुरे श्यामसुंदर | 71 |
| 18. | आंबेडकरवाद का भाष्यकारः–महाकवि वामनदादा कर्डक | सोनटक्के साईनाथ चंद्रप्रकाश | 73 |
| 19. | मध्यकालीन राजस्थान का नगरीय समाज –एक अध्ययन | डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत पवन सिंह शेखावत | 76 |
| 20. | हिन्दी नाट्य यात्रा | डॉ. मो. मजीद मिया | 82 |
| 21. | ज़िन्दगी और जोंक–मानव जिजीविषा की अथक कहानी | ज्योतिष कुमार यादव | 87 |
| 22. | .धर्मवीर भारती के मिथकीय काव्यों के कथा स्रोत | डॉ0 रीता तिवारी | 90 |
| 23. | अपने समय को व्यक्त करने का सलीका रखती कविता | आरले श्रीकांत लक्ष्मणराव | 94 |
| 24. | इतिहास का औपन्यासिक पुनर्वाचन और | अन्जू बी | 99 |

डॉ.युवराज माने
आबासाहेब मराठे आर्ट्स,
कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज,
राजापुर (महाराष्ट्र)

## १५.बारह घंटे उपन्यासः मनोवैज्ञानिक परिदृश्य

साहित्यकार के व्यक्तित्व को जानना, उसकी कृतियों को समझना तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के अनेक पक्षों से साक्षात्कार करना है। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसकी रचनाओं में व्याप्त रहता है ।यशपाल जी भी ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्हें उनकी कृतियों के माध्यम से समाज को पढ़ा जा सकता है। यशपाल जी हिंदी साहित्य के 'वरिष्ठ' साहित्यकार हैं। आपने हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है, लेकिन आप प्रमुखतरू से कहानीकार, उपन्यासकार के रूप में विश्व साहित्य में परिचित हैं। मनोविज्ञान से अभिप्रत होता है ।'मन का ज्ञान' वह विज्ञान जिसके माध्यम से मानव मन के विभिन्न व्यवहारों, क्रियाओं तथा आचरण का विश्लेषण किया जाए ।

**मनोविज्ञान का अर्थः**मनोविज्ञान 'साइकलोजी' (च्लबीवसवहल) शब्द का हिंदी रूपांतर है।"साइके (च्लबीम) और 'लोगस' (स्वहवे) शब्द से साइकलोजी (च्लबीवसवहल) शब्द बना है। 'साइके' शब्द का अर्थ है 'आत्मा' और 'लोगस' का है 'विज्ञान'।" (मनोज पाठक, 2006 ई.) अतरू हम मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान कह सकते हैं। मनोविज्ञान पर जर्मनी के विल्हेम वुण्डट, अमरिका के वाटसन, विगेना के सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड, फ्रायड के शिष्य एडलर और उन्हें सहकार्य करनेवाले कार्ल गुस्टेव युंग आदि हैं । लोकभारती बृहत प्रामाणिक हिंदी कोश के अनुसार 'मनोविज्ञान' का अर्थ है दृ "वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठनेवाले विचारों आदि का विवेचन होता है ।" (रामचंद्र वर्मा, 2012 ई.)

**बारह घंटे उपन्यासः मनोवैज्ञानिक परिदृश्यः**मानव मन संवेदनशील, चंचल होता है । उस पर किसी प्रकार के बंधन डालने का प्रयास किया तो वह विद्रोह कर बैठता है ।साहित्यकार अपने पात्रों के माध्यम से मानव मन की स्थिति को प्रस्तुत करता रहता है ।विविध विदवानों ने विभिन्न–विभिन्न मानव मन की प्रवृत्तियों को दर्शाया है। मनुष्य में मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं1.कामभावना 2. घुटन 3.हीनता 4. विविशता 5. कल्पना 6. आक्रोश 7. दमितइच्छाएँ8कामवृत्ति9तृप्तिअभाव–दैहिककुंठा–मानसिककुंठा–सामाजिककुंठा–बालमनोविज्ञान–जिज्ञासा–घृणावृत्ति–भय–स्वप्न–विद्रोह भावना–सहानुभूति–आज्ञापालन–अनुकरण आदि ।

**घुटन–**घुटन मानव जीवन की एक प्रवृत्ति है । मानव जीवन में जब विषम स्थिति व्युत्पन्न होती है, तब वह घबराहट महसूस करता है घबराहट जब आत्मविश्वास का स्थान लेती है तो मानव निराशा के अंधेरे में चला जाता है । 'बारह घंटे' उपन्यास में विनी या फैन्टम इसी अंधेरे का शिकार है । विनी की घुटन को देखकर फैन्टम समवेदना से भरे गले से बोलता है "रो लो बच्चा, रो लो । रोने से सहारा मिलता है तो रो लो । जानता हूँ रो न सकना कितना असाह्य है ।" (यशपाल, 2015 ई.)

रोने से तकलीफ कम हो तो रोना चाहिए । आश्रुओं के विरेचन से हृदय के दर्द को समाप्त करने का यह अच्छा मार्ग है पर विनी अपने दुरूख पीढ़ा को रोकर की कम नहीं कर सकती । उसी पीड़ा, दर्द को केवल वही महसूस कर सकती है । लेकिन विजय फैन्टम की उदार आत्मीयताने विनी को घुटन से बाहर आने के लिए मदद की । एक घायस की गति को दूसरा घायल ही जान सकता है । इसका प्रमाण हमें यहाँ मिलता है ।

**विवशता–**बदलते समय के कारण मानव जीवन अधिक से अधिक कठिन होता जा रहा है । परंपरा, रीति–रिवाज की चक्की में मानव जीवन पिसा जाता है । अपनी भाव–भावनाओं को अपने हृदय में ही रखने के लिए इन्सान विवश होता जा रहा है । इसका सफल वर्णन हमें 'बारह घंटे' उपन्यास में मिलता है । नायक 'विजय फैन्टम' और विनी नेपीयर' नायिका दोनों अपने साथी के वियोग पीड़ा को हृदय में बनाएँ रखे हैं । अपनी वियोग–व्यथा को वह किसी के सामने रख भी नहीं सकते । "फैन्टम विनी के सिसकियों को देख उसकी पीड़ा कम करना चाहता है, पर वह वियोग के आँसुओं का दर्द जानता था । इस दर्द को केवल प्रेम या समवेदना ही कम कर सकती है, अन्य कोई साधन नहीं । फैन्टम सहृदय समवेदना से विनी को कहता है "मैं जानता हूँ, बहुत कठिन है ! .... समवेदना में गहरी व्यथा को सह सकने का बल अपने हृदय से निकाल कर देना चाहता यह व्यथा का स्पर्श था, व्यथा को व्यथा का सहारा था ।" (यशपाल, 2015 ई.) यहाँ फैन्टम अपनी सहानुभूति से विनी का दर्द कम करना चाहता है, पर वह विवश है ।

**आक्रोशः–**आक्रोश एक मानसिक दशा है । आक्रोश में आवेगात्मक स्थिति निर्माण होती है । प्रतिक्रिया या लड़ाई की स्थिति । यह लड़ाई कभी समाज के प्रति होती है । या कभी आपनों